डॉ. राज बुद्धिराजा के कावेरी उपन्यास में नारी समस्याएँ

उमाजी पाटिल

जापान का सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हिंदी महिला उपन्यासकार डॉ. राज बुद्धिराजा अंतर्राष्ट्रीय ख्यातकीर्त साहित्यकार है। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में अपना अनमोल योगदान दिया हैं। उन्होंने हिंदी उपन्यास जगत को छ: उपन्यास दिए हैं। उन्ही में से प्रमुख उपन्यास हैं 'कावेरी' (1979)। 'कावेरी' उपन्यास में कावेरी, सुधि, चैती, उर्मि आदि नारी पात्रों द्वारा नारी जीवन की विविध समस्याओं को वाणी मिली हैं।

कावेरी उपन्यास में चित्रित समस्याएँ इस प्रकार है।

1. परित्यक्त्या नारी की समस्या-

'कावेरी' उपन्यास की नायिका कावेरी है, जो एक परित्यक्त्या नारी है। कावेरी ने दूसरा विवाह भी नहीं किया। पुरूष के साथ न रहनेवाली नारी को सभी लोग बीच चौराहे पर गिराने में लगे रहते हैं किंतु फिर भी कावेरी अपने जीवन में दूसरे पुरूष को स्थान नहीं देती।

परित्यक्त्या कावेरी पर समाज के लोग वार पर वार करते हैं। कावेरी पर परपुरूष के साथ संबंध रखने तक का लोग आराप लगाते हैं। कावेरी समाज में निहत्थी होकर विचरण करती है।

कावेरी के बच्चे- अनु-शांतनु अपनी-अपनी घर-गृहस्थी में मग्न हैं। उन्हें कावेरी की पूछ-ताछ के लिए भी उनके पास समय नहीं है। वे अपने परिवार में खुश है। इस प्रकार कावेरी उपन्यास में परित्यक्त्या नारी की समस्या को वाणी मिली है।

2. अकेलेपन की समस्या :

कावेरी एक परित्यक्त्या नारी होने के कारण पति उसके पास नहीं रहता है। उसके बच्चे भी कावेरी को छोडकर अलग-अलग अपनी गृहस्थी बनाए हुए हैं। कावेरी के मायकेवालों को भी कावेरी की फिक्र नहीं रही। अत: कावेरी अपने अकेलेपन के साथ जी रही है।

अपनी बेटी अनु के आने से कावेरी चहकने लगी थी। अकेलेपन में रहते-रहते कावेरी ऊब चुकी थी। किंतु बेटी के आने की खबर से उनके चेहरे पर आनंद और उत्साह दिखाई देने लगा। वह उसके स्वागत की तैयारी में लगी रही किंतु अनु है कि उसे अपने काम से फुर्सत ही नहीं मिलती।

कावेरी बैठे-बैठे एक अनाम दुनिया में पहुँच जाती है। उसके चेहरे को देखने से पता चलता है कि जैसे वह किसी भयानक जंगल में अकेले-अकेले सहम कर कदम रख रही हो। कावेरी अपने अकेलेपन की यंत्रणा को भोग रही है, जिसके बारे में कावेरी के बच्चे सोचते तक नहीं हैं। हर आदमी को अपना अकेलापन स्वयं को ही दूर करना होता है, किंतु कावेरी का अकेलापन किसी नकाब को ओढ लेने से दूर होनेवाला नहीं है।

कावेरी बचपन से ही अकेलेपन की शिकार रही है। बचपन में वह दोस्तों के साथ न मिलती-जुलती रही, न खेलकूद, न शरारत, न हँसी मजाक करती रही।

अत: कावेरी अकेलेपन की समस्या से ग्रस्त है।

3. प्रेम-विवाह की समस्या :

डॉक्टर साहब के जीवन में प्रवेश करने से कावेरी खुश है। डॉक्टर साहब कावेरी से प्रेम करते हैं। डॉक्टर साहब ने कावेरी के लिए रूबाइयाँ लिखना शुरू किया है। उनके होठों पर केवल कावेरी का ही नाम है। वे कावेरी को जन्म-दिन की मुबारक बात देते है। जबकि उसके जन्म से उसके माता-पिता भी खुश नहीं थे।

कावेरी भी डॉक्टर साहब से प्रेम करने लगी है। डॉक्टर साहब को देखकर कावेरी का चेहरा खिलने लगता है। उनमें वह अपने सपने के राजकुमार को देखती है। डॉक्टर ने कावेरी के रंगहीन जीवन में रंग भरने का काम किया है। किंतु कावेरी लोकलाजवश उनसे विवाह करना नहीं चाहती। वह उनके प्रति प्रेम व्यक्त करना भी नहीं चाहती, जिससे उसे बदनामी का सामना करना पडे।

4. कामकाजी नारी की समस्या :

कावेरी की सहेली सुधि अपने घरेलू कामकाज के साथ-साथ नौकरी भी करती है। अत: वह एक कामकाजी नारी है, काम में वह इतनी व्यस्त रहती है कि उसे अपनी सहेली उर्मि को पत्र लिखने की भी फुर्सत नहीं है।

घर-बाहर के काम को ढोते-ढोते सुधि ऊब गई है। वह चैती की तरह ही घरेलू औरत बनकर इत्मीनान से महावर

रचकर उत्सव-पर्व में पति से साडी के लिए मिन्नत-खुशामद करना पसंद करती। किंतु नौकरी कर के उसे अपना घर चलाना पडता है। इसलिए वह नौकरी करती है। कामकाजी नारी की समस्या को सुधि द्वारा वाणी मिली है, साथ ही कावेरी के माध्यम से नौकरी पेशा नारी की समस्या को प्रस्तुत किया है।

5. वृद्ध नारियों की समस्या :

वृद्धत्व मनुष्य जीवन की एक अवस्था है। वर्तमान समय में वृद्ध एक समस्या बन गई है। परिवार के लिए वृद्ध समस्या किस तरह बन रहे है? कुछ वृद्ध परिवार को त्रासदायक होते हैं, तो कुछ परिवार वृद्धों के लिए त्रासदायक होते हैं। कावेरी एक वृद्धा है, जिसे अपने बेटे तथा बहू से अलग रहना पडता है। बुढापे में भी उसका ध्यान रखनेवाला कोई नहीं है। किंतु यह सब कावेरी के नसीब में नहीं था। बहू के आने के बाद कावेरी और शांतनु के बीच दीवार खींच गई है।

6. परनिर्भरता :

आम भारतीय नारी को परनिर्भरता का अभिशाप जन्मजात विरासत के रूप में मिलता रहा है। आज भले ही नारी स्वयं निर्भर बन रही है, किंतु फिर भी अधिकांश महिलाएँ परनिर्भर है। नारी पिता, भाई, पति, बेटा आदि के सहारे अपना जीवन यापन करती रहती है। इसलिए वह परनिर्भर होती है। सुधि भी अपनी सहेली चैती की परनिर्भरता से प्रभावित होकर उसकी तरह पति पर निर्भर रहना चाहती है। इस प्रकार भारतीय नारी की परनिर्भरता की समस्या का लेखिका ने उपन्यास में उद्घाटन किया है।

7. बदनामी एवं चारित्रिक पतन की समस्या :

विविध क्षेत्रों में कार्यरत नारी को समाजद्वारा किस तरह बदनामी का सामना करना पडता है एवं उसका चारित्रिक पतन किस तरह किया जाता है? इसका श्रेष्ठ उदाहरण कावेरी उपन्यास में मिलता है।

कावेरी एक विश्वविद्यालय की प्रोफेसर है। कावेरी के घमंड से अनेक लोग संत्रस्त हैं। वे लोग कावेरी के बारे में अनेक अफवाएँ फैलाते हैं तथा उसकी बदनामी कर उसके चरित्र का पतन करते हैं।

इस प्रकार कावेरी के संदर्भ में अनेक अफवाएँ उठती हैं तथा उससे कावेरी की बदनामी होती रहती है।

8. अज्ञान और अशिक्षा से पीडित नारी :

चैती एक ऐसी नारी है, जिसमें अज्ञान और अशिक्षा व्याप्त है। चैती स्कूल में जाती थी, किंतु उसका पढाई में ध्यान अधिक नहीं रहा। वह बार-बार मास्टरनी जी से पीटती रही है। वह केवल अपने दिलबहलाव के लिए स्कूल जाती थी। चैती सुधि को बताती है, "फिर हमें कौन नौकरी करनी। हम तो दिल बहलाने के लिए स्कूल चले जाते थे। गाँव के चार जमातवाले स्कूल की दीवारें यदि हम लांघ भी जाते तब भी कौन पढाई करने शहर चले जाते एक-एक क्लास में दो-दो साल पडे रहे और मस्ती करते रहे। हमें कौन-सी वकालत करनी थी। जिंदगी भर ढोर डंगर चराने थे, वही चराते रहे। गाय-भैसों की जोडी को क्या पता कि उन्हें हाँकनेवाला अनपढ है या पंडित-मौलवी। मायके में उपले थापते रहे और ससुराल में कुट्टी काटते रहे। बहुत हो लिया तो कभी गीता-रामायण बाँच ली। इससे ज्यादा हमें करना ही क्या है?" इस प्रकार चैती अशिक्षा एवं अज्ञान से पीडित नारी है। कावेरी चैती की बचपन की सहेली है, जो आगे पढना चाहती है। किंतु चैती स्वयं तो अज्ञान से पीडित है ही साथ ही वह अपनी सहेली कावेरी को भी आगे की पढाई के लिए रोकती है। वह कहती है कि- अगर कावेरी अनपढ रहती तो घर में बैठकर राज करती। किंतु उसे दुनिया भर की किताबे पढनी थी। इससे उसकी सेहत भी खराब होती रही है।

चैती ढोर-डंगर चराती है। वह घर पर डटकर खा-पी कर चादर ताने सोती है। अगर उसे कोई पीटता भी है, तो भी उसे कुछ असर नहीं पडता। वह मानती है कि पीटनेवाला भौं-भौं कर के खुद-ब-खुद चुप हो जायेगा। वह ऐसा करने के लिए कावेरी से कहती है, किंतु कावेरी नहीं मानती।

9. दहेज की समस्या :

दहेज प्रथा का प्रचलन समाज में चलता है। यह एक समस्या बन जाती है। अक्सर शादी के लिए दहेज की लेन-देन होती रहती है।

दहेज की समस्या कावेरी के जीवन में भी रही है और उसकी बेटी के जीवन में भी। कावेरी की शादी जब हुई तब उसके ससुरालवालों को दहेज के रूप में बहुत सा धन दिया गया था। जब उसे पति द्वारा त्याग दिया गया, तब कावेरी उस धन को अपने साथ लेकर नहीं आयी थी।

कावेरी अपने विवाह में दिया हुआ दहेज तो नहीं लायी। वह अपनी बेटी-अनु के विवाह में दहेज देती है। इस दहेज के कारण कावेरी कर्जदार बन जाती है। इस कर्ज को चुकता करने के लिए उसे नौकरी करनी ही पडती है। अनु की शादी के लिए वह अपनी सहेलियों से भी उधार पैसे लेती है।

इस प्रकार कावेरी तथा अनु दोनों को दहेज की समस्या ने जकड लिया है।

10. अर्थार्जन का साधन नारी :

वर्तमान समय में नारी को अर्थार्जन के साधन के रूप में देखा जाता है। लडकी पढ-लिखकर नौकरी करने लगे और माता-पिता का परिवार चलाए, इस तरह की मानसिकता समाज में बढने लगी है। माता-पिता भी अपनी कमानेवाली बेटी की शादी के लिए आना-कानी करते रहते हैं।

कावेरी भी अपने परिवार के लिए अर्थार्जन का साधन है। कावेरी नौकरी कर के अपने बच्चों को संभालती है तथा परिवार चलाती है। कावेरी लडकी होकर गालियाँ देती है, इस बात के प्रति उसके परिवार में सहन नहीं किया गया था। किंतु बाद में जब पति द्वारा त्याग देने पर कावेरी नौकरी करने लगती है, तब उसके परिवारवाले कावेरी को अर्थार्जन के साधन के रूप में देखते हैं।

इस प्रकार कावेरी के प्रति परिवारवालों का दृष्टिकोण अर्थार्जन का साधन का रहा है। लेखिका ने इस समस्या के द्वारा समसामायिक नारी-जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत किया है।

11. प्रेम के अभाव की समस्या :

'कावेरी' उपन्यास के तीनों पात्र-कावेरी, उर्मि, सुधि अपने परिवार एवं पति के प्रेम से वंचित हैं। कावेरी को पति ने त्याग दिया है, साथ ही उसे परिवार से दूर रहना पड रहा है। उर्मि का पति-अजित भी उसे प्रेम नहीं दे पाता है। सुधि का पति-रवि उस पर हमेशा रोब झाडता है तथा उसे मार-पीट भी करता है।

कावेरी अपने परिवार के प्रेम से वंचित होने से दुःखी है। इस प्रकार कावेरी प्रेम के लिए छटपटाती है। किंतु वह उसे अप्राप्य है।

कावेरी के जीवन में प्रेम की बहार लेकर डॉक्टर साहब आते हैं, किंतु वह कावेरी को अपने प्रेम में बांध नहीं पाते। अत: वह दिल्ली चली जाती है।

12. चिंताग्रस्त नारी :

कावेरी आजीवन अपने बच्चों की चिंता में लगी रही। किंतु उसके बच्चों को कावेरी की चिंता कभी नहीं रही है। सुधि भी अपने घर-परिवार की चिंता में इस तरह व्यस्त रहती है कि उसे अपने सहेलियों से मिलने का दूर ही रहा। वह उनको खत लिखने तक के लिए समय नहीं निकाल पाती। उर्मि भी अपने परिवार की चिंता में लगी रहती है। चैती को अपने परिवार के साथ-साथ कावेरी की भी चिंता है। इसलिए चैती कावेरी से मिलने के लिए उसके घर पर आती है।

सुधि अपने घर-परिवार, बच्चों और पति की चिंता से ऊब चुकी है। सुधि अपने पति की चिंता में हमेशा लगी रहती है, जब कि उसके पति को सुधि की चिंता है ही नहीं। सुधि का पति रवि नौकरी के नाम पर न जाने क्या-क्या करता रहा है। फिर भी सुधि को उसकी फिक्र रहती है। कावेरी से आत्मीयता, स्नेह पाकर सुधि खुश होती है।

अत: 'कावेरी' उपन्यास के नारी पात्रों में अपने घर-परिवार के प्रति चिंता है।

13. पति से पीडित नारी :

सुधि का पति-रवि सुधि से घर के सभी काम जोर-जबरदस्ती से करवाता है। उसे पत्नी की कोई फिक्र नहीं है। रवि सुधि से हमेशा झगडता रहता है। रवि कमाने के नाम पर न जाने क्या-क्या करता है। सुधि नौकरी कर के अपना परिवार चलाती है।

सुधि अपने बारे में उर्मि को लिखने के बाद उर्मि के पति की बात करती है। उर्मि का पति अजित छोटी-छोटी बातों पर उर्मि पर नाराज होकर उससे झगडा करता है।

कावेरी भी अपने पति से त्रस्त होकर घर छोडकर चली आयी होगी, ऐसा सुधि मानती है। सुधि अपने पति से पीडित होकर कावेरी के पीडा को भी नापने की कोशिश करती है। इसीलिए सुधि कहती है, " मैं ही कब बता सकती हूँ कि रवि मेरे लिए है या नहीं? मेरे लिए न जीकर वह अपने लिए जीता है। क्यों जिंदगी गुजारी जाये उस आदमी के साथ जो सिर्फ अपने लिए चक्की पीसता है। शायद कावेरी दी भी इसीलिए अपने उनके साथ निभा नहीं पायी होंगी।"

इस प्रकार 'कावेरी' उपन्यास की नारी पति के द्वारा पीडित है, जो एक समस्या है।

14. परिवार में लडकी का स्थान :

कावेरी को जन्म से लडकी होने के कारण परिवार में उसे हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है। कावेरी को खाने पीने तक की पाबंदी थी। इसके संदर्भ में सुधि लिखती है- " सरसों के तेल में डूबी बाती की रोशनी में कावेरी चीनी खाने के लिए मचल उठी थी और जसोदा मैय्या ने गुस्से के मारे सिर पर दे मारा था। जरा से ठेले में खून कहाँ दिखता? त्ध्रेरे एक बिस्तर खून में रंग गया और कावेरी बेहोश हो गयी तब, लगे सब जन तुलसी माँ के चौरे पर उसकी जिंदगी की भीख माँगने। काश उस दिन तुलसी मैय्या ने सब की पुकार न सुनी होती-कावेरी को इस कदर तकलीफ तो न भोगनी पडती।"

कावेरी को परिवारवाले हमेशा उसे लडकी होने का अहसास दिया करते थे। उसे कहीं भी आने-जाने की स्वतंत्रता नहीं थी। कावेरी के माता-पिता दान पुण्य में विश्वास करते थे। किंतु अपनी लडकी के लिए पैसे देने में अथवा उसे शिक्षा देने के लिए तैयार नहीं थे। पति ने त्यागने पर वह कहाँ रहती है? किस हालत में है? इसे जानने की उन्होंने आवश्यकता नहीं महसूस की। वह कावेरी को अपने पास बुलाने के लिए भी तैयार नहीं थे।

कावेरी के माता-पिता द्वारा कावेरी का कोई लाड-प्यार न हो सका। यहाँ तक की उसकी माता देश-विभाजन के समय कावेरी को अपने साथ लाने की अपेक्षा पाकिस्तान में ही छोड आने में कोई बुराई नहीं मानती थी।

इस प्रकार कावेरी के माध्यम से लेखिका ने परिवार में लडकी का स्थान किस तरह हेय माना जाता है? इसका प्रस्तुतिकरण किया है।

अत: 'कावेरी' उपन्यास में सुधि, उर्मि, कावेरी, अनु, चैती इन नारी पात्रों के द्वारा नारी जीवन की समस्याओं को प्रखर वाणी लेखिका ने प्रदान की हैं।

निष्कर्ष :

अंतत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'कावेरी' उपन्यास एक समस्याप्रधान उपन्यास है। जिसमें नारी जीवन की विविध समस्याओं-परित्यक्त्या नारी की समस्या, अकेलेपन की समस्या, प्रेम-विवाह की समस्या, कामकाजी नारी की समस्या, वृद्ध नारियों की समस्या, परनिर्भरता, बदनामी एवं चारित्रिक पतन की समस्या अज्ञान और अशिक्षा से पीडित नारी, दहेज समस्या, आदि समस्याओं को उपन्यासकार डॉ. राज बुद्धिराजा ने सफलतापूर्वक एवं अपने कौशल के साथ रेखांकित किया है। इन समस्याओं के कारण नारी का जीवन यापन करना कितना कठिन बना है, इस पर भी दृष्टिपात होता है।

अत: 'कावेरी' उपन्यास नारी-जीवन की समस्याओं को यथार्थ की भूमि पर प्रस्तुत करनेवाला श्रेष्ठ उपन्यास है।

संदर्भ :

1. डॉ. राज बुद्धिराजा-कावेरी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. संपादक, डॉ. पुष्पलता वर्मा एवं ज्ञानेश्वर मुळे, भारत-जापान की सांस्कृतिक सेतु तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. इंदराज सिंह- महिला सशक्तीकरण डायमंड पॉकेट बुक्स दिल्ली.
4. भावना शहा कुमार- महिला सशक्तीकरण में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका- प्रियंका प्रकाशन.

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com